Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

समकालीन हिन्दी कविता में दलित चेतना की अभिव्यक्ति

Dr. Kulwant Singh*

Assistant Professor, Department of Hindi, M. M. PG College, Fatehabad, Haryana

सार – *प्राचीन काल से दललत कुचला एवं दबाया जा रहा था। पशुवत जीवन को उसने अपनी लनयलत मान लिया था, लेकिन समयांतर में दलितों में मुक्ति-चेतना जागृत होती गई और वह अपने मानवोचित अधिकारों के लिये सतर्क एवं सजग बनता गया। इन सामाजिक अवस्थाओं परिवर्तन का प्रतिबिम्ब साहित्य में उभरकर सामने आया। प्राचीन साहित्य में दलित दमन एवं दलन का वर्णन मिलता रहा है, जबकि परवर्ती रचनाओं में बंधनों के इस मकड़जाल से मुक्ति कि छटपटाहट स्पष्ट रूप से द्रष्टिगत होती है। यह मुक्तिसंघर्ष समयकाल अनुसार तीव्र से तीव्रतर बनता प्रतीत होता है। दलित कविता इसी पारिवैशिक परिवर्तनों की प्रत्यक्षदर्शी बनी रही है। जहाँ प्राचीन कालीन रचनाओं में अत्याचारों का वर्णन करके सामाजिक कलंक को सामने लाने की वृत्ति मिलती है। वहीं आधुनिक कविता में ऐसी अतार्किक एवं अमानवीय समाज व्यवस्था के प्रति आक्रोश एवं विद्रोह कि तीव्रता महसूस की जा सकती है।*

----------X----------

प्रस्तावना

वर्ण और जाति व्यवस्था हमारे समाज का अभिन्न अंग रही है। सदियों से हमारा भरतीय समाज ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र वर्णो में बंटा रहा है। इन वर्णों में हजारों जातियां विद्यमान रही हैं। इनमें से कुछ जातियों को निकृष्ट बनाकर उनके समस्त अधिकार व स्वतन्त्रता छीन ली गई। भेदभाव और दैवीय आधार पर इन जातियों को दबाया, कुचला जाने लगा। जिनके फलस्वरूप इन जातियों के लोगों में आक्रोश फैल गया। ये लोग और कुछ समाज सुधारकों ने इस जाति व्यवस्था के विरूद्ध आवाज भी उठाई लेकिन कुछ ज्यादा सफलता नही मिली। यहाँ तक कि कबीरदास, रैदास जैसे समाज सुधारक क्रान्तिकारी कवियों ने इस प्रकार की संकीर्ण व्यवस्था के विरूद्ध खुलकर हल्ला बोला। मीराबाई, जोतिबा फूले, सावित्री बाई फूले, डा. भीमराव अम्बेडकर के अथक प्रयासों ने इस प्रकार के भेदभाव को नकार कर समानता के भाव उजागर किया। इसे ही वर्तमान समय में दलित साहित्य के नाम से जाना जाता है।

समाज में दलित होने के पीछे दो कारण विद्यमान है। एक जातीय आधार और दूसरा आर्थिक पिछड़ापन या दरिद्रता। जातीय शोषण को आधार बनाकर लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य की श्रेणी में आता है- "पूर्व में दलितों को चांडाल, हीन, अवर्ण, अत्यंजु अछूत, अस्पृश्य परियाह, पंचम आदि के नाम से सम्बोधित किया जाता था। दलितों को उनकी जाति जैसे चमार, धोबी, खटीक, पासी आदि के नाम से बुलाया जाता था। ये जाति सूचक शब्द अपमान का प्रतीक बन गए थे। इन सभी अस्मिताओं की हम दलितों की विकृत पहचान कर सकते थे। क्योंकि इनको सवर्ण समाज द्वारा दलितों पर थोपा गया है। जिसे हिन्दू धार्मिक पुस्तकों ने मान्यता प्रदान कर पुख्ता कर दिया है।"1 समकालीन हिन्दी काव्य में दलित साहित्य की अभिव्यक्ति अछूतानंद की कविता से आरम्भ होती है। जिन्होने रूढ़ियों, अंधविश्वासों तथा गली-सड़ी परम्पराओं ने दलितों को और दलित बना दिया-

अब नही वह जमाना जुल्म हरिहर मत सहो

तोड़ दो जंजीर जकड़े मत गुलामी में रहो।"2

हीरा डोम ने तो अपनी कविता 'अछूत की शिकायत' में तो भगवान को उलाहना दे दिया है कि आपने प्रहलाद, गजराज, विभीषण, द्रोपदी की रक्षा में तत्परता दिखाते हैं, हमने ऐसा क्या अपराध किया है कि हमारी विनती तनिक नही सुनतो होः-

हमने के राति दिन दुखवा भोगत बानी

हमनी के सहेब से मिली सुनाइबि,

www.ignited.in

हमनी के दुःख भगवानओं ने देख ताजे,

हमनी के कबले कलेसवा उझाइबि।''3

डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर तो शिक्षा के अभाव को दलित शोषण का प्रमुख कारण मानते हैं। दलित समाज को शिक्षित करके ही उन्हे अपने अधिकारों व सम्मान के प्रति जागरूक किया जा सकता है। वे लिखते हैं-

कलम की कीमत जान चुका हूं

पीड़ा तेनी पहचान चुका हूं

शिक्षा के ही खेल हैं सारे

इतने अब मैं मान चुका हूं।''4

श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कन्धों पर' दलित त्रासदी का महाकाव्य कहा जा सकता है। इसमें व्यवस्था की सच्चाईयों से अवगत कराकर दलितों के दलन के समस्त कारकों को परत दर परत उधेड़ा है। वे स्वंय को अपने पूर्वजों से जोड़ कर देखते हैं तो उनके अन्दर अपने पूर्वजों की तिमिलाहट सुनाई पड़ती है तो वे कहते हैं-

मैं तुम्हारे जिस्म का अंश-भर नही हूं

तुम्हारी विवशताओं की विरासत भी हूं

कौन जाने कि मेरे भीतर

तुम्हारे आंसुओं की ताप-भाप

मेरी अभिव्यक्ति की सृजनकारी

आग्नेय ऊर्जा तुम्हारी है मेरे पूर्वज।''5

कर्मशील भारती का काव्य-संग्रह 'कलम को दर्द कहने दो' सही मायने में दलितों की पीड़ा के दर्द का जीवन्त दस्तावेज है। जिसे कवि ने होटलों, रेस्तराओं और परचून की दुकान पर काम करने वाले बाल श्रमिकों की व्यथा को चित्रित किया है। उनकी 'बाल श्रमिक' कविता की पंक्तियां इसका सबूत हैं-

मालिक को सन्तुष्ट और खुश देखने को

तपती दुपहरी, कड़कती ठंड और लगातार बारिश में

दिन भर सामर्थ्य से अधिक श्रम करते-करते

बाल श्रमिक के कोमल लेकिन अल्पविकसित हाथ

जो सही माने में।

अभी विकसित होना चाहते हैं।''6

कवि शेखर का 'मेरे कुनबे के लोग 'काव्य संग्रह सही मायने में दलित चेतना का संग्रह है। जिसमें कवि ने दलित चिन्तन की अनिवार्यता के साथ-साथ दूसरे अवरोधों से भी सचेत किया हैः-

हमारा कुनबा सूरज की ज्वाला है

लोकतन्त्र की धारा है

हमारी पाठशाला है

पर हमारी अकल पर ताला है।''7

सूरजपाल चैहान जाने माने दलित काव्यकार हैं। उनका काव्य-संग्रह 'क्यों विश्वास करूं' अम्बेडकरवादी दलित चेतना को समर्पित है। उनकी वाणी में मानों दलित चिंतन प्रतिकार की भावना से भर उठा होः-

फिर मैं तुम्हारे रचे शब्दों के

सीने पर चढ़कर डंका बजाऊंगा

विजयश्री का क्योंकि अब मैं गूंगा नही हूं।''8

कवि चैहान ने व्यवस्था के प्रति आक्रोश प्रकट करते हुए कहा है कि आजादी के 50 वर्ष बीत जाने के बाद दलितों की स्थिति ज्योंकि त्यों बनी हुई है। 'मेरा गाँव' के शीर्षक कविता में चैहान जी ने वर्तमान समय में दलितों की यथार्थ स्थिति को उजागर किया हैः-

उनका खेत उन्ही के बैल

और उन्ही का ट्यूबवैल

मेरे हिस्से मेहनत आई

उनके हिस्से है आराम

मेरा गाँव कैसा गाँव''9

कर्मशील भारती जाति, वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय और क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर भारतीयता के समर्थक है। उन्होने दलितों के प्रति हो रहे भेदभाव, घृणा, असमानता को समाप्त करने के

www.ignited.in

अथक प्रयास किए। वे सच्चे मानवतावादी हैं। उन्होने माना है कि वर्ग और जाति के दंश ने करोड़ों लोगों के जीवन को नरक बना दिया है। इसलिए वे मानवता की स्थापना पर बल देते हैं-

मैने कभी किसी से घृणा नही की, छल नही किया

न सिखाई कभी किसी को घृणा

मैने सीखा है प्रेम से रहना

एकता करूणा और शील पर कायम रहना

अंहिसा, प्रज्ञा, निष्ठा, स्त्री सम्मान

मैं दलित हूं।''10

उपसंहार:

उपसंहार स्वरूप हम कह सकते हैं कि समकालीन हिन्दी कविताओं में दलित चिन्तन अथवा दलितों को अभिव्यक्ति वर्तमान भारतीय समाज का आईना है। दलित साहित्य विध्वंस का साहित्य न होकर सृजन का साहित्य है। यह सदियों से दम्भ पड़ी रूढ़ियों, गली-सड़ी परम्पराओं, खोखली मान्यताओं और विचारधाराओं को मिटाना चाहता है क्योंकि ये मानव को मानव नही रहने देती। समाज के कुछ दम्भी लोगों ने वर्ण और जाति के आधार पर समाज को बांटकर जो जहर की धारा प्रवाहित की थी वो धारा आज अथाह समुद्र का रूप धारण कर चुकी है। समकालीन कवियों ने विशेषतः दलित कवियों ने अपनी पीड़ा को, दर्द को कविता के माध्यम से व्यक्त करके अपनी उदेलित भावनाओं को शान्त किया है तथा दलितों को समाज में सम्मान जीवन जीने के लिए प्रेरित भी किया है। आज दलितों की ही नही अपितु व्यवस्था की व समाज की मांग है समस्त मानव जाति को समता और सम्मान मिले।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. विवके कुमारः दलित समाजः पुरानी समस्याएं नई आकाक्षाएं, पृ.11
2. स्वामी अछूतानंदः सचित्र जीवनी, शील प्रिय बौद्ध पृ.31
3. मोहनदास नैमिशरायः ब्यान (अक्तूबर 2009) पृ.09
4. डॉ. राजेन्द्र बउगूजरः भीड़ी गलियां तंग मकान, प. 71
5. श्यौराज सिंह बेचैनः मेरा बचपन मेरे कंधों पर, पृ. 202
6. कर्मशील भारतीः कलम को दर्द कहने दो, पृ. 23
7. कवि शेखरः मेरे कुनबे के लोग पृ. 56
8. सूरजपाल चैहानः क्यों विश्वास करूं, प. 19
9. सूरजपाल चैहान क्यों विश्वास करूं प.22
10. कर्मशील भारती कलम को दर्द कहने दो पृ. 62

Corresponding Author

Dr. Kulwant Singh*

Assistant Professor, Department of Hindi, M. M. PG College, Fatehabad, Haryana

kulwantsingh9983@gmail.com